कठोपनिषद् के तीन वरदान –

वेद का ज्ञानकाण्ड होने से उपनिषद् को ब्रह्मविद्या कहा जाता है। उपनिषदों में जो ब्रह्मविद्या ही परा विद्या या श्रेष्ठ विद्या है। उपनिषदों में जो ब्रह्मविषयक विज्ञान प्रतिपादित किया गया है वही परा विद्या है। शेष कर्म विषयक विज्ञान अपरा विद्या है। इसे कर्म विद्या भी कहते हैं। कर्मविद्या तत्काल फल नहीं देती है, कालान्तर में उसका फल मिलता है। कर्मफल विनाशी भी होता है। इसके विपरीत ब्रह्मविद्या तत्काल फल देती है और यह अविनाशी होता है। इसीलिए ब्रह्मविद्या श्रेष्ठ है। यही ब्रह्मविद्या मुक्ति का एकमात्र कारण है। कहा गया है - 'जो ब्रह्मविद्या अथवा आत्म तत्वज्ञान नहीं जानता, वह परमात्मा को नहीं जान सकता - ' नावेदविन्मनुते तं बृहन्तम्'

कठोपनिषद् के 'ऋतं पिबन्तौ' मंत्र में आत्मा का, उपाधि भेद से जीवात्मा और परमात्मा के रूप में भेद प्रतिपादित किया गया है। इस मंत्र में भेद का सत्यताबोधक कोई भी शब्द नहीं है

मृत्यु ने (यम ने) नचिकेता को तीन वर देने का वचन दिया था। इस अनुसार नचिकेता ने प्रथम वर में पिता की अनुकूलता मांगी और द्वितीय वर में अग्नि विद्या के लिए प्रार्थना की। दोनों वरों के मिल जाने पर नचिकेता ने पुनः प्रार्थना की, 'कृपया मुझे यह समझ दीजिए कि आत्मा देहेन्द्रियों से भिन्न है कि नहीं'

मृत्यु ने प्रलोभन दिखाकर नचिकेता को इस वर प्रार्थना से विरत होने का अनुरोध, परंतु नचिकेता किसी भी प्रलोभन में नहीं आए - उन्होंने एक भी नहीं सुनी। नचिकेता निःस्पृहता देखकर मृत्यु ने उसकी

Scanned with CamScanner

बड़ी प्रशंसा की और आत्मज्ञान होने पर परम पुरुषार्थ सिद्ध हो जाता है। नचिकेता ने कहा - 'आत्मा का यथार्थ स्वरूप क्या है' इसके उत्तर में मृत्यु ने आत्मा की देहेन्द्रिय भिन्नता बतायी है और आत्मा के यथार्थ स्वरूप की व्याख्या की। आत्मा किस प्रकार अपने यथार्थ स्वरूप का ज्ञान कर सकती है; यह भी मृत्यु ने बताया।

नचिकेता ने पूछा था जीवात्मा का विषय - जीवात्मा और परमात्मा एक ही हैं - जीवात्मा में संसारीपन है और परमात्मा संसारीपन नहीं है। नचिकेता प्रश्न यह है - 'येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये-

ऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं
वराणामेष वरस्तृतीयः ॥
(कठो० 1।1।20)

'कोई कहता है, मृत्यु के अनन्तर भी देहातिरिक्त आत्मा का अस्तित्व रहता है और कोई कहता है, नहीं यह भारी संशय है। तुम्हारे उपदेश से मैं इसे जानना चाहता हूँ। यह मेरा तीसरा वर है।

इसका उत्तर पाने के पहले ही नचिकेता परमात्म विषयक एक और असंगत प्रश्न कैसे करते? मृत्यु तो इस प्रश्न को जटिल समझते थे। उन्होंने इसका उत्तर देने में बड़ी आनाकानी की। मृत्यु ने स्पष्ट ही कहा - यह दुर्विज्ञेय है, देवों को भी इस विषय में सन्देह हो जाता है। इसलिए इसके उत्तर

V. Palwal, Deptt. of Skt. B.A. III Yr. Contd.